

2. हरि अपने आँगन कछु गावत ।
तनक-तनक चरनन सौं नाचत, मनहिं-मनहिं रिझावत ॥
बाँह उचाड़ काजरी-धौरी, गैयनि टेरि बुलावत ।
कबहुँक बाबा नंद पुकारत, कबहुँक घर में आवत ॥
माखन तनक आपने कर लै, तनक-बदन में नावत ।
कबहुँ चितै प्रतिबिम्ब खंभ में, लौनी लिए खबावत ॥
दुरि देखति जसुमति यह लीला, हरष आनंद बढ़ावत ।
सूर स्याम के बाल-चरित ये, नित देखत मन भावत ॥

शब्दार्थ :

मैया – माँ । मोहि – मुझे/मुझको । दाऊ – बड़ेभाई बलराम । खिझायो – चिढ़ाया ।
मोसों – मुझसे । मोल – खरीद कर । लीन्हों – लाया गया । जसुमति – यशोदा ।
जायो – जन्मा । रिस – क्रोध । पुनि-पुनि – बार-बार । तुमरो – तुम्हारा/तुम्हारे । तात
– पिता । कत – क्यों, किसलिए । स्याम – काला । चुटकी – अंगूठे और पास की अंगुली
से बजाना । ग्वाल – गोपाल । सिखै – सिखा देते । बलवीर – बलराम । मोही – मुझे
ही । दाउहि – बड़े भाई से । रिझावत – प्रसन्न होते हैं । कबहुँ – कभी भी । खीझै – गुस्सा
करना । चितै – देख कर । लौनी – मक्खन । खबावत – खिलाते हैं । दुरि – छिपकर ।
तनक-तनक – नन्हें-नन्हें । खीझै – गुस्सा करना । रिस – गुस्सा । लखि – देखकर ।
रीझै – प्रसन्न होना । चबाई – निंदक, चुगलखोर । जनमत – जन्मसे । धूत – शैतान,
शरारती । गोधन – गाय रुपी धन । सौं – सौगंध, शपथ, कसम । पूत – पुत्र, बेटा ।

पदों को समझें :

1. इस पद में कृष्णकी बाललीला का वर्णन है । बालक कृष्ण माँ यशोदा के पास शिकायत करते हैं कि माँ ! मुझे बलराम भैया चिढ़ाते हैं । वे मुझे कहते हैं कि तुझे खरीद कर लिया गया है । जसुमति ने तुझे जन्म नहीं दिया है । इसलिए मैं उनके साथ खेलने नहीं जाता । वे बार-बार मुझे पूछते हैं कि कौन तेरी माता और कौन तेरे पिता हैं ?

नंद गोरे हैं, यशोदा गोरी है, तू क्यों श्यामल/काला है। यह सुनकर मुझे चिढ़ाने के लिए ग्वाल बालक चुटकी बजाकर नाचते हैं। बलराम भैया उन्हें सिखा देते हैं। तूने सिर्फ मुझे मारना सीखा है। बलराम भैया पर खीझती नहीं। मोहन के मुख पर गुस्सा देख कर और उनकी गुस्सैली वाणी सुनकर यशोमति प्रसन्न हो जाती हैं। माँ कहती है कान्हा सुन, यह बलराम चुगलखोर है वह जन्म से शरारती है। मैं गोधन की कसम खाकर कहती हूँ कि मैं तेरी माता और तू मेरा पुत्र है।

2. बालक कृष्ण घर के आंगन में अकेले खेल रहे हैं ? उनका यह खेल सबके मन को मोह लेता है। यह वर्णन बहुत ही हृदयग्राही है।

भगवान कृष्ण अपने आप कुछ गा रहे हैं। वे गाते-गाते नन्हें चरणों से नाचते भी हैं और मन मगन भी हो रहे हैं। कभी वे हाथ उठाकर काली एवं सफेद गायों को बुलाते हैं, तो कभी नंद बाबा को पुकारते हैं। वे कभी घर के भीतर चले जाते हैं। घर में जाकर थोड़ा मक्खन हाथ में लेकर खाते हैं, और थोड़ा सा मुँह में लगा लेते हैं। कभी खंभे में अपना प्रतिबिंब देखकर उसे माखन खिलाते हैं। माता यशोदा दूर से ही खड़ी होकर यह लीला देख रही हैं और आनंदित हो रही हैं। सूरदास कह रहे हैं कि कन्हैया की यह बाललीला रोज-रोज देखने पर भी प्यारी लगती है। इससे मन तृप्त नहीं होता।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

- (क) कृष्ण यशोदा से क्या शिकायत करते हैं और क्यों ?
- (ख) बलराम कृष्ण से क्या पूछते हैं ?
- (ग) यशोदा किसकी कसम खाती हैं और क्या कहती हैं ?
- (घ) चुटकी देकर ग्वाल-बालक क्यों नाचते हैं ?

2. निम्नलिखित पदों के अर्थ दो-तीन वाक्यों में स्पष्ट कीजिए :

- (क) पुनि-पुनि कहत कौन है माता, कौन है तुमरो तात ।
- (ख) सूर स्याम मोहि गोधन की सौं हौं माता तू पूत ।
- (ग) तनक-तनक चरननि सौं, नाचत, मनहिं-मनहिं रिझावत ।
- (घ) कबहुँक चितै प्रतिबिम्ब खंभ में, लोनी-लिए खबावत ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

- (क) बाललीला (पद) के रचयिता कौन हैं ?
- (ख) कौन कहते हैं कि तुझे मोल कर लाया गया है ?
- (ग) बलराम पुनः पुनः क्या कहते हैं ?
- (घ) ग्वाले बालक किस तरह हँसते हैं ?
- (ङ) माँ यशोदा ने किसे मारना सिखा है ?
- (च) कौन दाऊ पर नहीं खीझती है ?
- (छ) स्याम शरीर का अर्थ क्या है ?
- (ज) 'जनमत ही को धूत' का अर्थ क्या है ?
- (झ) माँ यशोदा किसकी सौगंध खाती हैं ?
- (ञ) कृष्ण किसे माखन खिलाते हैं ?
- (ट) यशोमति क्या देखकर हर्षित हो जाती हैं ?

भाषा-ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए :

मोल, सौं, पूत, तनक, धूत, बाँह, मैया, खिझायो, गैयनि, कजरी

2. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :

नित, चरन, कर, बाँह, रिस, तात, जात, बदन,
स्याम, धूत, सौं, पूत, शरीर, खीझे, चबाई



तुलसीदास

कवि परिचय :

भक्त कवि तुलसी दास का जन्म सन् 1532 में उत्तर प्रदेश के राजापुर में हुआ था और देहांत सन् 1633 में । पितामाता के स्नेह से वंचित होकर बचपन में उनको बड़ा कष्ट उठाना पड़ा । सौभाग्य से गुरु नरहरिदास ने उनकी बड़ी मदद की । तुलसी रामभक्त थे और यौवन काल में ही साधु बन गये । रामानंद उनके गुरु थे । वे हिन्दी और संस्कृत के बड़े पंडित थे । उस समय मुगलों का शासन था । देश की सामाजिक और धार्मिक परिस्थियाँ अस्तव्यस्त थीं । तुलसी दास ने रामचरित मानस लिखकर लोगों के सामने निष्कपट जीवन और आचरण का उदाहरण रखा । आज भी यह देश का अत्यंत लोकप्रिय ग्रंथ है । जन साधारण उसे बड़े चाव से पढ़ते हैं । दुःखी, निराश तथा भक्त लोगों को रामचरितमानस पढ़कर सुख शान्ति मिलती है । विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली आदि उनके अनेक ग्रंथ हैं । वे अवधी और ब्रजभाषा दोनों में लिखते थे ।

दोहे

तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँओर ।
वसीकरण यह मंत्र है, परिहरु वचन कठोर ॥
गोधन, गजधन, बाजिधन और रतनधन खान ।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान ॥
रोष न रसना खोलिए, बरु खोलिओ तरवारि ।
सुनत मधुर परिनाम हित, बोलिअ वचन विचारि ॥

शब्दार्थ :

मीठे – मीठा, मधुर । वचन – बात, वाणी । ते – से, द्वारा । उपजत – उपजना, पैदा होना । चहुँओर – चारों ओर । वसीकरण – वशीकरण, वश में या अधीन में कर लेना । मंत्र – प्रभावी शब्द, सलाह, परामर्श, वेदों के गायत्री आदि वेदादि साधन वाक्य जिनसे यज्ञादि का विधान हो । परिहरु – परित्याग करना, त्यागना, छोड़ना । कठोर – कठिन, कड़ा, शक्त, दृढ़, अप्रिय । गोधन – गाय धन स्वरूप है । गज – हाथी । बाजि – घोड़ा, अश्व ।